3

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 3 के अंक	=	कुल अंक
		4		4

मध्यप्रदेश

|| श्री गणेशाय नमः ||

उत्तर → 2 :- बाबू गुलाबराय के अनुसार →

"निबंध उस गद्य रचना को कहते है जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सजीवता, सौष्ठवता, आवश्यक संगति एवं सम्बद्धता के साथ किया जाता है।"

प्रस्तुत परिभाषा के अनुसार निबंध गद्य की प्रभावपूर्ण विधा है।

उत्तर - 4. रस के प्रमुख अंग :-

रस के अंगो को 4 भागों में बांटा जाता है :-

1 - स्थायी भाव।
2 - विभाव।
3 - अनुभाव।
4 - संचारी भाव।

अंकों का योग

उत्तर - 5 - मात्रिक व वार्णिक छन्द में अन्तर :-

मात्रिक छन्द	वार्णिक छन्द
1- मात्रिक छन्द के अन्तर्गत मात्राओं का ध्यान रखा जाता है।	1- वार्णिक छन्द के अन्तर्गत वर्णों का ध्यान रखा जाता है।
2. काव्य का प्रकार पता करने के लिए मात्राओं को गिना जाता है।	2. काव्य का पता करने के लिए मात्राओं को न गिनकर वर्णों को गिना जाता है।

उत्तर → 6 चम्पू काव्य की परिभाषा :-

चम्पू काव्य के अन्तर्गत गद्य एवं पद्य के मिश्रित स्वरूप का प्रयोग किया जाता है। चम्पू काव्य का प्रयोग हिन्दी में कम ही किया जाता है, इसका प्रयोग अधिकतर संस्कृत में ही किया जाता है। हिन्दी के प्रसिद्ध चम्पू काव्य का उदाहरण निम्न है :-

लेखक	रचना
मैथिली शरण गुप्त	सिद्धराज

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

5 | 8 + 3 = 11

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 5 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

उत्तर – 7 → हिन्दी की दो प्रमुख पत्रिकाओं के नाम :–

(i) ~~गृहशोभा~~ । सरस्वती ।

(ii) ~~मेरी सहेली~~ । विनय-पत्रिका ।

ये दोनों प्रसिद्ध पत्रिकाएं एवं हिन्दी की जगतप्रसिद्ध पत्रिकाएँ हैं । इन पत्रिकाओं में गृह सज्जा, कुकिंग, समाज में नारी आदि महत्वपूर्ण विषयों पर विचार विमर्श किया जाता है ।

उत्तर – 8 → वाक्य शुद्धिकरण →

(अ) उसके सब काम गलत होते हैं ।

(ब) कश्मीर का सौन्दर्य मनमोहक है ।

उत्तर → 9 → मुहावरों का अर्थ सहित वाक्यों में प्रयोग :–

(अ) पानी-पानी होना → लज्जित होना ।
वाक्य → नकल करते हुए पकड़े जाने पर मोहन शर्म से पानी – पानी हो गया ।

⑥

11	+	5	=	16
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 9 के अंक		कुल अंक

(ब) खून पसीना एक करना → अत्याधिक मेहनत करना

वाक्य → राम ने परीक्षा की तैयारी करने के लिए खून पसीना एक कर दिया।

उत्तर - 10 वाक्य परिवर्तन (आदेशानुसार)

(अ) शायद राम घर पर है।

(ब) जो व्यक्ति आलसी होता है वह कभी भी उन्नति नहीं कर सकता है।

उत्तर - 11 लोकगीत की परिभाषा :-

"वह उक्ति जो उस स्थान विशेष की स्थानीय भाषा में लोगों के मनोरंजन आदि के लिए गाकर सुनाई जाती है। लोकगीत कहलाता है।"

लोकगीत पूर्णतः सामाजिक वस्तु है, जिसकी पूर्ति अनुसरण द्वारा होती है। हमारे अंचल में बुन्देली लोकगीत अधिक प्रचलित है। उदा. - बुन्देलखण्डी।

B S E M P

5

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर = 12 → प्रस्तुत उक्ति हिन्दी विशिष्ट के "आशा - सर्ग से" नामक पद्य खण्ड से लिया गया है। इसके कवि जयशंकर प्रसाद जी हैं।

प्रसाद जी ने "ऊषा" एवं "कालरात्रि" नामक शब्दों का प्रयोग निम्न अर्थ में किया हैं।

ऊषा का अभिप्राय → प्रातः काल का समय।
कालरात्रि का अभिप्राय → अन्धेरी रात्रि।

प्रस्तुत कविता में जो दृश्य हैं वह महाजलप्लावन के बाद का हैं। इसके अन्तर्गत प्रलय के बाद जब सूर्य की प्रकाशित किरणें पृथ्वी पर पड़ती हैं, तो ऐसा लगता हैं, मानो अब प्रातः काल हो गया है और अन्धेरी रात जल में कहीं छिप गई हैं।

कवि ने उत्प्रेक्षा अलंकार की अत्यंत मनमोहक छटा का वर्णन दिखाया हैं।

विशेष :-

नई ऊर्जा होती है पथ पर,
तो फिर अंधेरा छट जाता हैं॥
चाहे जितनी दीवारे हो।
व्यक्ति पार कर जाता हैं॥

उत्तर - 13 → निबन्धकार के समक्ष अर्थात् लेखक "पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी" जी के समक्ष "क्या लिखूं" निबन्ध के अन्तर्गत विभिन्न समस्याओं को दर्शाया है ;-

कुछ समस्याएं निम्न हैं ;-

(i) शीर्षक चयन की समस्या ;- इस निबंध को लिखते समय सबसे बड़ी समस्या 'शीर्षक चयन की होती हैं, शीर्षक ऐसा होना चाहिए जो पाठक को निबंध पढ़ने पर मजबूर कर दे।

(ii) शैली चयन की समस्या ;- निबंध लेखन में शैली चयन की समस्या भी उत्पन्न होती हैं अतः निबन्ध किस शैली में लिखा जाए कि वह शील रूपी चयन बन सके।

(iii) विशिष्ट मानसिक स्थिति ;- निबंध लिखने के लिए विशिष्ट मानसिक स्थिति के अन्तर्गत लिखे जाते हैं उनका समय और विषय पर कोई प्रभाव नही पड़ता हैं।

उपरोक्त समस्याएं हैं।

BSEMP

3

पृष्ठ के अंकों का योग

विशेष :- "निबंध उस विशेष मानसिक स्थिति में लिखे जाते हैं जहाँ न तो ज्ञान की बेड़ियां होती हैं और न विषय की महिमा।"

उत्तर → 14 → द्विवेदी युग के निबंधों की विशेषताएं :-

जब से साहित्य में निबंध लेखन का कार्य प्रारंभ हुआ है तब से विभिन्न युगों में विभिन्न प्रकार के निबंधों की रचना की जाती रही है। जैसे - भारतेन्दु युग में राजनीति व समाज सुधार सम्बन्धी निबंध। द्विवेदी युग के निबंधों में भी कुछ ऐसी ही विशेषताएं थी :-

(i) भाषा व्याकरण सम्मत :- द्विवेदी युग के निबंधों की भाषा पूर्णतः व्याकरण सम्मत थी अर्थात् ऐसे निबंधों में शब्दों में कसावट साफ नजर आती है। इस प्रकार निबंधों में व्याकरण संबंधी गुण मिलते हैं।

(ii) नीरसता एवं दुरूहता :— गंभीर विषयों पर निबंध लिखे जाने के कारण इस युग के निबंधों में नीरसता एवं दुरूहता पाई जाती थी। ये पढ़ने में रोचक नहीं होते थे।

(iii) ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी उच्च स्तरीय निबंधों की रचना :— द्विवेदी युग के निबंधों में ज्ञान-विज्ञान संबंधी उच्च स्तरीय निबंध लिखे गए। इस युग के निबंधों में विज्ञान, तकनालॉजी आदि का अतिविशिष्ट स्थान है।

इस प्रकार द्वि-वेदी युग में लिखे गए निबंधों में उपरोक्त विशेषताएँ थीं।

उत्तर - 15 - चीनी फेरी वाले की कथा हमारे पाठ्य पुस्तक में "चीनी फेरी वाला" नामक पाठ में "महादेवी वर्मा" जी द्वारा वर्णित है। प्रस्तुत पाठ में बताया गया है

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग 3

कि चीनी फेरी वाला इलाहाबाद का एक फेरी वाला है। जो कपड़े बेचकर अपनी आजीविका चलाता था। जब वह 5 वर्ष का था तब उसके पिता की मृत्यु हो गई। विमाता ने उसे घर से निकाल दिया और वह गिरहकटों के गिरोह में फंस गया।

वहाँ उसे निम्न अनुभव हुए :-

(i) गिरहकटो के गिरोह में उसे अनुभव हुआ कि यथार्थ जीवन क्या है यहाँ उन सभी दुविधाओं का अन्त हो गया जो मानव जीवन को लेकर उसके मन में थी।

(ii) वहाँ वह पैरों की आवाज से ही समझ जाया करता था कि वह व्यक्ति खाली हाथ आ रहा है या अपने साथ कुछ लेकर आ रहा है।

(iii) वह अनायास ही यह जान गया था कि जीवन जीने के लिए खाने के अलावा भूख की भी आवश्यकता होती है।

इस गिरोह में रहकर उसने यह सीखा कि इस दुनिया में धन कमाने के सभी रास्ते एक हैं। किसी भी राह पर चलकर धन कमाया जा सकता है।

|| आवश्यक धन है,
मार्ग नहीं ||

(12) 27 + 3 = 30

योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 12 के अंक — कुल अंक

BSEMP

उत्तर - 16 :- भगवान के घर देर है अन्धेर नहीं :-

प्रस्तुत भाव के अन्तर्गत यह बताया गया है कि - भगवान सब देखता है वह अच्छे लोगों के अच्छे कार्यों के साथ ही साथ बुरे लोगों के बुरे कार्यों को भी देखता है।

जब भगवान अपना न्याय करता है, तो उसके आगे व्यक्ति के कार्यों का सच्चा ब्योरा पेश किया जाता है। भगवान के द्वारा दिया गया फैसला कभी भी गलत नहीं हो सकता। शर्त केवल इतनी है कि वह फैसला थोड़ी देर से होगा। जब भगवान की लाठी चलती है तो सत्य सामने निकल ही आता है। अनायास ही व्यक्ति को वह सब मिल जाता है जो उसने किया है।

इसी कारण कहा जाता है कि "भगवान के घर देर है अन्धेर नहीं"

English में कहते है :-

"God Sees the Truth But Waits"

3

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर -17 → "राम प्रसाद बिस्मिल" जी ने "आत्मकथा" के माध्यम से यह बताया है कि वे पुनः भारत में ही पुनर्जन्म लेना चाहते है क्योंकि भारत भूमि को कष्टो से मुक्त करना ही है।

"बिस्मिल" जी स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नायक थे। वे अपनी जान की परवाह न करते हुए भी अंग्रेजों से युद्ध किया करते थे। इस प्रकार अंग्रेजो से युद्ध करते रहने पर जब उन्हें जेल में फांसी दी जाने की बात कही गई तो वे यह कहते थे →

देशहित में मरना पड़े मुझको सहस्त्रों बार भी।
तो भी इस कष्ठ को न निज ध्यान में लाऊं कभी।

बिस्मिल जी जानते थे कि भारत भूमि को कष्ठों से मुक्त करने के लिए उन्हें कई पुनर्जन्म लेने होंगे अब वह हर-संभव प्रयास करते थे कि वे भारत में ही पुनर्जन्म लेकर भारत भूमि को कष्टो से मुक्त कर सके।

उनका नारा था कि →

मरते अशफाक, रोशन, लाहिड़ी इनके अत्याचार से

होंगे पैदा सैकड़ो।
इनके रुधिर की धार से।

→ "बिस्मिल"

उ० = 18 → "सुन मन मूढ़ सिखवन मेरो" नामक पद्य हमारी पाठ्य पुस्तक साहित्य भारती के "विनय के पद" नामक संस्करण से अवतरित है। इसके कवि "तुलसीदास" जी है।

प्रस्तुत पंक्तियों में :-

"सुन मन मूढ़ सिखावन मेरो"

☞ प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा महाकवि तुलसीदास जी अपने मूर्ख मन को समझाते हुए कह रहे हैं कि - हे मूर्ख मन! सुन सूर्य और चन्द्रमा भी भगवान के चरणों से दूर होकर हमेशा इधर - उधर भटक रहे हैं। आसमान मे इनका बैरी राहू भी इनका पीछा नही छोड़ रहा है।

BSEMP

2
पृष्ठ के अंकों का योग

(15) | 35 | + | | = | 37 |
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 15 के अंक | कुल अंक

यूँ तो गंगा पावन सरिता है फिर भी भगवान विष्णु के चरणों से दूर होने के बाद निरन्तर बहती ही जा रही है एक क्षण के लिए भी विश्राम नहीं कर पाती है।

इन उदाहरणों के माध्यम से तुलसीदास जी मन को समझा रहे है कि तू भगवान की भक्ति कर उसी में देश का सार छिपा हुआ है।

विशेष :- { भगवत भक्ति से परे। मिले न शिव कैलाश में। }

उत्तर - 19 आत्मकथा और जीवनी मे अन्तर :

आत्मकथा	जीवनी
1 - आत्मकथा व्युक्ति स्वयं लिखता है।	1: जीवनी दूसरे व्यक्ति के द्वारा लिखी जाती है।

BSEMP

2. आत्मकथा के अन्तर्गत व्यक्ति अपने गुण-दोषों का विवेचन स्वयं करता है।	2. जीवनी लेखन में दूसरों के द्वारा गुण-दोषों का वर्णन किया जाता है।
3. आत्मकथा के अन्तर्गत व्यक्ति सत्य की खोज स्वयं करता है।	3. जीवनी लेखन में व्यक्ति सत्य की खोज स्वयं नहीं करता है।
4. आत्मकथा का उदाहरण अमृतलाल की "कलम के सिपाही" है।	4. जीवनी का उदाहरण पं. जवाहरलाल नेहरू की "मे
4. आत्मकथा का उदाहरण पं. जवाहर लाल नेहरू की "मेरी कहानी" है।	4. जीवनी का उदाहरण "अमृतलाल" की "कलम के सिपाही" है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर → 20 → "भोर का तारा" हमारी पाठ्य पुस्तक के "भोर का तारा" नामक गद्य खण्ड से अवतरित है, इसके लेखक जगदीश चन्द्र माथुर जी है।

"भोर का तारा" यह रचना उज्जयिनी के महालेखक या महाकवि शेखर की सर्वश्रेष्ठ रचना थी। इस रचना में शेखर ने एक कवि के जीवन की भावनाओं, प्रेम आदि को बहुत अच्छे ढंग से उतारा था यह रचना "भोर का तारा" शेखर के जीवन की उन समस्त मार्मिक व सात्विक गतिविधियों से निमग्न थी जो वह अपने जीवन में अपनाना चाहता था।

परन्तु माधव के द्वारा सच्चाई जानने पर उसने काल्पनिक दुनिया का परित्याग कर दिया और भोर का तारा रचना को जला दिया। अब अपने राज्य के लिए शेखर उत्साही, जोश तथा उत्साह से सम्बन्धित रचना लिखना चाहता था।

अतः इसी कारण भोर का तारा जलने के बाद शेखर की मानसिक स्थिति में परिवर्तन हो गया और वह प्रभात का सूर्य बना।

18 | 42 + 1 = 43
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 18 के अंक | कुल अंक

विशेष :-
माधव ने छाया से कहा
" जो शेखर भोर का तारा था अब वह " प्रभात का सूर्य बनेगा । "

उत्तर = 21 → " मैं तुम लोगों से दूर हूँ " रचना " गजानन माधव " मुक्तिबोध " जी द्वारा रचित है इस रचना में उन्होंने एक मामूली मोटर - मैकेनिक और अमीर लोगों के बीच की दूरी बताई है ।

एक मामूली मोटर - मैकेनिक ही जीवन की यथार्थता को भलीभांति पहचान सकता है । वह उन बड़े लोगों से यह कह रहा है - कि मैं तुम लोगों से बहुत दूर हूँ । तुम्हारी और मेरी सोच मे जमीन - आसमान का अन्तर है अत: वह मामूली मोटर मैकेनिक है अत: वह हर उस मामले के बारे मे जानता और जानना

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग
1

चाहता है जिससे उसका मतलब है अतः वह हर जानकारी जिससे उसे एवं उसके विभिन्न वर्गों को प्रभाव पड़ता है। वह एक मामूली मोटर मैकेनिक है, अतः वह समाज की कड़ु सच्चाई से भली भांति परिचित है वह कहता है कि →

मैं अपनी सार्थकता से खिन्न हूँ,
फिर से अप्रसन्न हूँ।
क्योंकि जो है उससे बेहतर चाहिए,
सारी दुनिया साफ करने के लिए
मेहतर चाहिए।
वह मेहतर मैं नहीं पाता हूँ।
फिर भी कोई रोज अन्दर से
चिल्लाता है।

▷ गजानन माधव "मुक्तिबोध"

20 | 45 | + | 2 | = | 47
योग पूर्व पृष्ठ | | पृष्ठ 20 के अंक | | कुल अंक

उत्तर → 22 ⇒ काव्य की परिभाषा

" जो उक्ति हृदय में कोई मार्मिक भावना जाग्रत कर दे या प्रस्तुत वस्तु या तथ्य को उस मार्मिक भावना मे लीन कर दे वह काव्य है। "

↳ पंडित रामचन्द्र शुक्ल

काव्य की सुन्दरता बढ़ाने के लिए ही विभिन्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। ये उपकरण ही अलंकार होते है।

काव्य के दो भेद है ;-

(i) दृश्य काव्य ।

(ii) श्रव्य काव्य ।

(i) दृश्य काव्य ;- जिस काव्य को देखकर या पढ़कर आनन्द का अनुभव किया जाता

BSEMP

7
पृष्ठ के अंकों का योग

है उसे दृश्य काव्य की संज्ञा दी जाती है।

(ii) श्रव्य काव्य :- जिस काव्य को सुनकर आनन्द का अनुभव किया जाता है वह श्रव्य काव्य है।

श्रव्य काव्य के प्रकार :-

(i) प्रबंध काव्य
  (i) महाकाव्य
  (ii) खण्डकाव्य
  (iii) आख्यानक गीतिका

(ii) मुक्तक काव्य
  (i) पाठ्य मुक्तक
  (ii) गेय मुक्तक

काव्य के विभिन्न प्रकारों के अन्तर्गत ही इनसे सम्बन्धित उदाहरण दिए गए है :-

महाकाव्य → साकेत ।
कामायनी ।

खण्डकाव्य → पंचवटी ।
यशोधरा ।

आख्यानक गीतियाँ → स्वर्ग में विचार सभा ।
विपात्र ।

पाठ्य मुक्तक → बिहारी, कबीर व रहीम के दोहे ।

गेय मुक्तक → मीरा व जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ ।

इस प्रकार काव्य का रूप अत्यंत विस्तृत है ।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

23

49	+	2	=	51
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 23 के अंक		कुल अंक

उत्तर = 23 ;- "तीन सयाने" एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यंग रचना है इसके अन्तर्गत "हरिशंकर - परसाई" जी ने समाज की नीतियों पर करारा व्यंग किया है। इन व्यंगों के अन्तर्गत ही लेखक ने तीन सयानों की कल्पना की है ;-

तीन सयाने → 1 - कला।
2 - धर्म।
3 - विज्ञान।

ये तीनों ही तीन सयाने हैं इनमें कला स्त्री तथा धर्म एवं विज्ञान पुरुष हैं।

समाज के प्रति इन तीनों का ही विशिष्ट योगदान है।

कला → कला समाज में रहने का सही तरीका बतलाती है कि किस तरह समाज में रहकर विभिन्न प्रकार के मनुष्यों के साथ रहकर अपने आप को अलग सबसे अलग साबित किया जा सकता है।

धर्म :- धर्म के द्वारा ही समाज में व्यक्ति - व्यक्ति एवं लोगों के बीच मे रहकर आपसी सामंजस्य के साथ ही साथ आपसी गतिविधियों को ही लेकर उन सभी क्रियाओं पर नियंत्रण लगा सकते हैं। इस प्रकार धर्म भी सामाजिक प्रीत है।

विज्ञान → विज्ञान ही वह शक्ति है जिसके द्वारा उन सभी बातों को संभव बनाया जा सकता है जिसकी मनुष्य ने केवल कल्पना ही की थी अतः विज्ञान के द्वारा ही स्वप्न सच होते हैं।

विशेष :- कला, धर्म एवं विज्ञान तीन सयाने एक साथ। इस प्रकार करते हैं वे हमारे साथ हमारा ज्ञान।

B S E M P

2
पृष्ठ के अंकों का योग

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल (25)

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगाये

H.S.S.C. +2

केन्द्र की सील

पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 13/3/07

केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

केन्द्र क्रमांक C. No.-71075

परीक्षा का नाम H.S.S.C + 2

विषय हिन्दी विशिष्ट B. माध्यम हिन्दी

दिनांक 13/03/07

पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

उत्तर → 24. साहित्यिक परिचय

"महादेवी वर्मा"

"आधुनिक हिन्दी साहित्य की रीढ़ "महादेवी वर्मा" ही है।"

(ब) रचनाएँ :— (i) रश्मि।
(ii) नीरजा।
(iii) दीपशिखा।
(iv) यामा।
(v) नीहार।

(अ) भाषाशैली :— महादेवी वर्मा एक ऐसी विदुषी महिला है जो अपने भावो को विभिन्न शैलियों में बांटने में सक्षम है :—

ओ अंकों का योग

55 + 2 = 57
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 2 के अंक | 54 कुल अंक

उनकी शैली की कुछ विशेषताएँ निम्न लिखित हैं अतः —

(i) चित्रात्मक व अभिनव पूर्ण कला :-

महादेवी वर्मा एक ऐसी साहित्य कार हैं जिनके साहित्य सृजन में चित्रात्मकता का प्रधान गुण मिलता है। अपनी रचनाओं के द्वारा ही उन्होंने अभिनव पूर्ण के समस्त लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
हिन्दी साहित्य में वे अमर रहें

(ii) व्यंजनात्मक योजना :- बिंब व प्रतिबिंब का प्रभाव उत्पन्न करने के बाद महादेवी वर्मा के व्यंजनात्मक तथ्यों का पता लगाया है इस प्रकार व्यंजनात्मक तथ्यों की अधिकता उनके साहित्य में मिलती है"।

(iii) भावात्मक योजना :- अपनी सभी योजनाओं के अन्तर्गत भावों को विशेष रूप से अपनी

57 + 1 = 58
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 3 के अंक | कुल अंक

रचनाओं में पिरोना वर्मा जी को खूब आता है।

इस प्रकार वे हर तरह से पूर्ण है।

(स) साहित्य में स्थान :- महादेवी वर्मा का साहित्य में विशेष स्थान है उन्होंने अपने सभी लेखों में अपनी लेखनी क्षमता का भरपूर प्रयोग किया है।
आधुनिक हिन्दी साहित्य में इनका विशेष एवं अग्रण्य स्थान है।

उत्तर = 25 "साहित्यिक परिचय"

बिहारी

(स) रचनाएँ :- (i) बिहारी सतसई
बिहारी जी की यही एक रचना है। इसके अन्तर्गत 700 दोहो का संकलन है जिसके कारण इसे "सतसई" नाम से विभूषित

पृष्ठ 28

58	+	1	=	59
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक

किया गया है।

(अ) भावपक्ष :- पाठ्यक्रम में कवि बिहारी के केवल 15 दोहे संकलित हैं परन्तु फिर भी इ बात की पुष्टि की जा सकती है कि वे विविध रसो के अथाह सागर हैं :—

(i) भावनात्मकता का प्रेमपूर्वक वर्णन :-

रीतिकालीन कवि बिहारी के काव्यों की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि इन्होंने प्रत्येक भाव को बहुत ही सुगमता एवं श्रेष्ठता से दिखाया है।

(ii) चित्रात्मकता की अनुभूति :- बिहारी जी के काव्यों में विभिन्न भावों की चित्रात्मकता की अनुभूति मिलती है अतः चित्रों का सा वर्णन आने पर आगे से अधिक अच्छे वर्णन भी प्रस्तुत हो सकते हैं।

BSEMP

1

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल (29)

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

1. केन्द्र की सील H.S.S.C. +2
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 13/3/07
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक C. No.-71075
5. परीक्षा का नाम H.S.S.C. + 2
7. विषय विशिष्ट हिन्दी 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 13/03/07
पृष्ठ

59 + 1 : 60

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

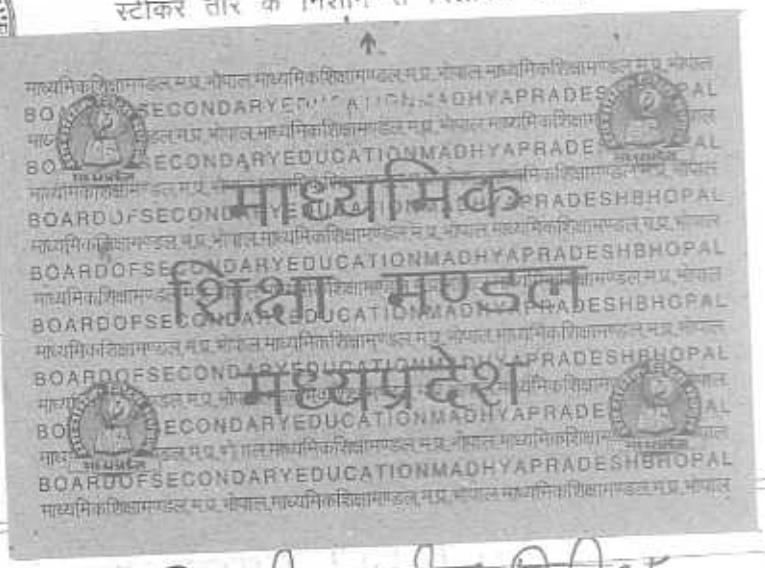

BSEMP

1

पृष्ठ के अंकों का योग

(ब) कलापक्ष :- बिहारी जी विविध कलाओं के अथाह सागर हैं अतः कलात्मकता की दृष्टि से वे अग्रणी हैं।

तंत्री नाद कवित्त रस, सरस राग रति रंग।
अनबूड़े बूड़े तरे, ज्यों बूड़े सब अंग।।

इसी एक दोहे के द्वारा ही बिहारी जी ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दे दिया है अतः विभिन्न प्रकार के रसों के अथाह सागर के रूप में बिहारी जी अभूतपूर्व हैं।

गागर में सागर → अपनी इस कला

के द्वारा ही बिहारी जी ने कई काव्य उपलब्धियाँ प्राप्त की है अत एक रूपक में अनेक रूपक दिए हैं।

तभी बिहारी जी की प्रशंसा में कहा जाता है :-

सतसइया के दोहरे
ज्यों नाविक के तीर
देखन में छोटे लगे
घाव करे गंभीर ॥

उत्तर → 26. गद्यांश की व्याख्या

तुम्हारी वाणी ------- सकते हो

सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक साहित्य भारती के "भोर का तारा" नामक गद्य खण्ड से लिया गया है। इसके लेखक श्री जगदीश चन्द्र माथुर जी है।

BSEMP

62	+	2	=	62
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 3 के अंक		कुल अंक

प्रसंग -> प्रस्तुत गद्य खण्ड में माथुर जी माधव और शेखर के बीच हो रहे संवाद को दर्शा रहे हैं।

व्याख्या -> जगदीश चन्द्र माथुर जी के अनुसार शेखर को माधव यह समझाइश दे रहा है कि आखिर तुम्हारे हाथ में क्या नहीं है? तुम्हारे हाथ में कलम की ताकत है। इसके द्वारा तुम सभी नौजवानों के दिल व आत्मा को झकझोर कर रख सकते हो। तुम सिर्फ तुम चाहो तो लाखो लोग आज मृत्यु के सामने आ सकते है। तुम्हारे पास एक ऐसी ताकत है। जिसके द्वारा तुम संसार जीत सकते हो। तुम युवको में जान फूंक सकते हो। अपने बल पर कुछ भी कर सकते हो।

3

विशेष :- (i) भाषा सरल व सहज है।

(ii) ओज गुण दृष्टव्य है।

(iii) शेखर को उत्साहित किया गया है।

3

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

65 + 2 = 67

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

पृष्ठ 32

उत्तर = 27. पद्यांश की व्याख्या

तुम जो स्वाधीनता - - - - - चाहता हूँ।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक साहित्य भारती के "सहयोग, श्रम और शान्ति" नामक पाठ से लिया गया है। इसके कवि श्री "रामधारी सिंह 'दिनकर'" जी है।

प्रसंग :- दिनकर जी कह रहे हैं कि

उत्तर = 27.
वह विवर्ण - - - - - घिरे से

सन्दर्भ :- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक साहित्य भारती के "यशोधरा" नामक खण्ड काव्य से अवतरित है। इसके कवि श्री मैथिली शरण गुप्त जी है।

शब्दार्थ :- त्रस्त = परेशान। सृष्टि = पृथ्वी। शरद = ठंड। विकास = उन्नति

प्रसंग :- यशोधरा शरद ऋतु में प्रकृति के दुख से तुलना कर रही है।

B S E M P

2

पृष्ठ के अंकों का योग

(33) माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील **H.S.S.C. +2**

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 13/03/07

3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

4. केन्द्र क्रमांक **C. No.-71075**

6. परीक्षा का नाम हायर सेकेण्डरी परीक्षा-20

7. विषय हिंदी विशिष्ट 8. माध्यम हिंदी

8. दिनांक 13/03/07

पृष्ठ

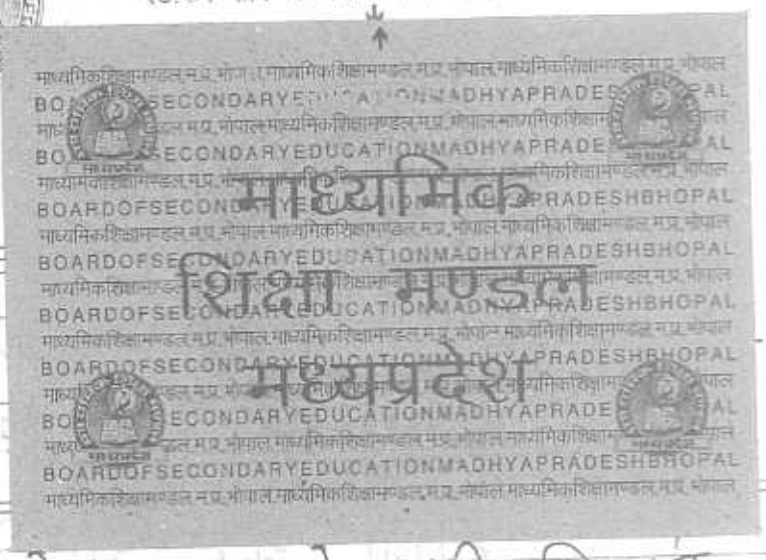

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

BSEMP

व्याख्या :- यशोधरा अपने पति सिद्धार्थ के जाने के बाद अपनी दशा पर चिन्ता करती हुई कहती है कि प्रकृति का वह मुँह जो उतर गया था वह आज पुन: मुस्कुराने लगा है आज पुन: जब वर्षा की ऋतु समाप्त हो गई है तो शरद ऋतु के आगमन पर सृष्टि का विकास नए सिरे से हो रहा है आज जब शरद ऋतु के आनंद में सारी प्रकृति सराबोर है तो केवल मैं ही अकेली हूँ। यही वह सोच रही है।

विशेष :- (i) कोमलकांत पदावली दृष्टव्य है।

(ii) वियोग श्रृंगार रस की प्रधानता है।

(iii) भाषा सरल व सुबोध है।

पृष्ठ के अंकों का योग 2

69 (योग पूर्व पृष्ठ) + 3 (पृष्ठ 2 के अंक) = 72 (कुल अंक)

उत्तर = 28 अपठित गद्यांश

(अ) शीर्षक → "लोगों की निन्दा"

सारांश → निन्दा - वह कटाक्ष जो पल में राजा से रंक बनाने के लिए काफी होता है। यह खुद को भूलकर सदैव दूसरों को याद करने व अत्यंत समझाने की गलती करती है। वह जो खुद को राजा और दूसरे को रंक समझती है।

BSEMP

3 (पृष्ठ के अंक का योग)

पृष्ठ 35

72	+	4	=	76
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 3 के अंक		कुल अंक

उत्तर - 29 शिकायती पत्र

सेवा में,

श्री मान महापौर महोदय,
महापौर कार्यालय,
नगर - निगम, सतना (म.प्र.)

विषय :- मोहल्ले की सफाई से सम्बन्धित पत्र !

महोदय जी,

मैं आपका ध्यान सतना की बंजर बस्तियों की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। जैसा कि आप जानते ही हैं कि इन बस्तियों में सवा लाख आबादी है। परन्तु गत कुछ महीनों से सफाई न होने के कारण इस बस्ती की हालत बहुत खराब है। नालियों का पानी सड़क तक आने लगा है जिससे प्लेग, मलेरिया जैसी बीमारियाँ आम हो गई हैं।

अतः आपसे निवेदन है कि लोगो के स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक फैसले लेने की कृपा करें !

धन्यवाद !

दिनांक
13/3/07

भवदीय
अ. ब. स.

BSEMP

4
पृष्ठ के अंकों का योग

76 + 1 = 77

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

37

उत्तर = 30 -

निबंध

भारत में कृषि का महत्व :-

* रूपरेखा

* प्रस्तावना →
(कृषि आधार है)

* कृषि का इतिहास →

* आधुनिक विकास की नीति →

* विभिन्न मशीनों का प्रयोग →

* देश की जनसंख्या →

* भारत पर प्रभाव →

* उपसंहार →

BSEMP

1

पृष्ठ के अंकों का योग

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

H.S.S.C.+2

...की सील

...क्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 13/03/07

...केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

...केन्द्र क्रमांक No.-710/5

...परीक्षा का नाम हायर सेकेण्डरी परीक्षा, 20...

...विषय हिंदी विशिष्ट 8. माध्यम हिंदी

...दिनांक 13/03/07

771/78

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

हरियाली दी तुमने।
तुमने दिया सपना।
जिससे हमने पाया।
आज अपना गौरव॥

प्रस्तावना :- कृषि इन दो शब्दो के अन्तर्गत ही भारत का आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन घूमता है। आज अगर मानव ने अपनी विभिन्न मान्यताओं को सच कर दिखाया है तो उसके ऊपर भी कृषि का ही योगदान है। आज मानव ने

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

78	+	2	=	80
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 2 के अंक		कुल अंक

विकास की चरम सीमा को लांघ लिया है जिसके कारण मानव की उन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकेगी।

फसल के बीच जीवन चक्र

कृषि का इतिहास :- भारतीय सभ्यता का आधार केवल कृषि ही है इसके अन्तर्गत भारत में 5000 ई. सा पूर्व से अर्थात प्रकृति के प्रारंभ से ही भारत के लोग केवल कृषि पर ही आश्रित है प्रारंभ के जनजीवन से लेकर आज तक कृषि की प्रणाली में बहुत सारे परिवर्तन हो चुके है परन्तु आज

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

भी मानव के जीवन का आधार केवल कृषि ही है।

उदाहरण →

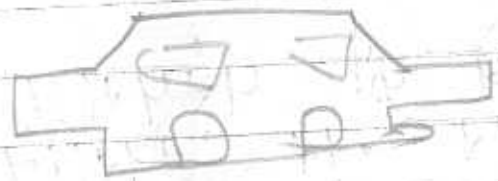

आज यहाँ है।

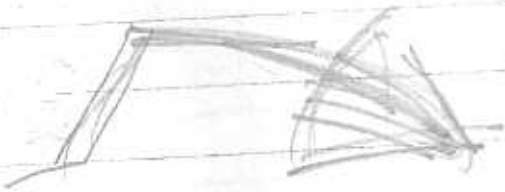

कल यहाँ थे।

★ आधुनिक विकास की नींव :-

आधुनिक विकास के लिए भी आज कृषि और केवल कृषि ही है. मानव की सभ्यता का आधार भी केवल कृषि ही है।

BSEMP

82	+	1	=	83
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक

BSEMP

आज मानव सफलता के सोपान पर चढ़ रहा है तो उसका श्रेय भी केवल कृषि को ही जाता है।

* विभिन्न मशीनों का प्रयोग :-

आज कृषि की परंपरागत प्रणाली के स्थान पर नई मशीनों व यंत्रों का प्रयोग किया जा रहा है और इसके द्वारा ही कृषि की उन्नति की जा रही है। जिससे आज सम्पूर्ण क्षेत्र में कृषि का उत्पादन बढ़ा है।

ट्रेक्टर भी है

1

पृष्ठ के अंकों का योग

* देश की जनसंख्या :- देश की बढ़ती हुई जनसंख्या में ही कृषि को आज

2007

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

H.S.S.C. +2

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

केन्द्र की सील

पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 13/3/7

केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

केन्द्र क्रमांक C. No.-71075

परीक्षा का नाम Higher Sec. Exam.

विषय Hindi 8. माध्यम Hindi

दिनांक 13/3/7

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

उस प्रकार की ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया है जिसके कारण हम गर्त में गिरते जा रहे हैं। और देश हमेशा विकासशील ही होता है।

अन्न है कम लोग है ज्यादा।

कैसे करें पूर्ति अनाज की।।

भारत पर प्रभाव ! — यदि आज हम अपनी सारी जनसंख्या का पेट भर पाते हैं तो हम कहेंगे कि हमने सब पा लिया।

के अंकों का योग

84	+	3	=	87
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 2 के अंक		कुल अंक

पृष्ठ 42

★ उपसंहार → आज मानव को वह सब चाहिए जो उसके पास नहीं है। अतः वह सब चाहेगा जो कभी भी प्राप्त नहीं किया जा सकता।

परन्तु यदि मानव हैं तो उसे यह पाना ही होगा।

हम तो थे जमीं पर।
तुम आसमां पर ले गए

उ०- 1 — प्रस्तुत पंक्तियों में रूपक अलंकार है। क्योंकि पत्ते रूपी वस्त्र है।

उ०- 3 — मौन होगो में।
पूर्वी दोगो में।
मध्य प्रदेश में।
इन स्थानों पर बोली जाती है

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग